# षट्खंडागम पुस्तक-४ (फोल्डर नं. ००१३९८)

मुख्य टाइटल

विषयसूची


प्राक्कथन ---------- १-४

Introduction ---------- i-iv

Mathematics of Dhavala with index (by Dr. A. N. Singh)---------- i-xxiv

१. सिद्धान्त और नके अध्ययनका अधिकार----------१

२. शंका-समाधान ---------- १६

३. विषय-परिचय ---------- २३

४. विषय-सूची---------- ३०

५. शुद्धिपत्र ---------- ५९

६. क्षेत्र-स्पर्शन-कालप्रमाणदर्श चार्ट----------२९-अ-आ

मूल, अनुवाद और टिप्पण ---------- १-४८८

क्षेत्रानुगम ---------- १-१३८

विषयकी उत्थानिका---------- १-९

धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा----------१

क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश भेद-कथन ----------२

क्षेत्रानुयोगद्वारके अवतारकी उपयोगिता----------२

निक्षेपकी उपयोगिता, उसका स्वरूप और भेद...---------- २-७

क्षेत्रशब्दकी निरुक्ति, एकार्थवाचक नाम,....----------७-८

लोकशब्दकी निरुक्ति, भेद और उसका स्वरूप----------९

क्षेत्रानुगमका अर्थ तथा निर्देश का स्वरूप ----------९

ओघसे क्षेत्रानुगमनिर्देश---------- १०-५६

मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्रनिरूपण ---------- १०

लोक पदसे घनलोकका ही अभिप्राय है,...----------१०-११

अन्य-आचार्य-प्ररूपित मृदंगाकार लोकके प्रमाणका निरूपण... ---------- १२-१८

मृदंगाकार लोक घनलोकके संख्यातवें भाग है... ---------- १८-१९

लोकका आयाम, विष्कम्भ और उत्सेधका निरूपण ---------- १९-२०

लोकका तीनसौ तेतालीस घनराजु न मानने पर...---------- २०-२१

असंख्यातप्रदेशी लोकमें अनन्त जीव कैसे रह सकते हैं... ---------- २२-२४

आकाशकी अवगाहना शक्तिका निरूपण ---------- २४-२५

जीवोंकी स्वस्थान, समुद्घात और उपपाद...---------- २६-३०

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, सात समुद्घात... ---------- ३१

अधोलोक और ऊर्ध्वलोकका प्रमाण---------- ३२

त्रसकायिक पर्याप्तराशिके संख्यातवें भाग... ---------- ३३


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ्रमरक्षेत्रके निकालनेका विधान ---------- ३४
गोम्हिक्षेत्रके निकालनेका विधान ---------- ३४
शंखक्षेत्रके निकालनेका विधान ---------- ३५
महामत्स्यक्षेत्रके निकालनेका विधान ---------- ३६
तिर्यग्लोकका स्वरूप ---------- ३७
वैक्रियकसमुद्घातगत मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र निरूपण ---------- ३८
देव अपने अवधिज्ञानके क्षेत्रप्रमाण विक्रिया करते हैं... ---------- ३८
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली... ---------- ३९-४७
देव, मुष्य और नारकियोंका उत्सेध क्रमशः दश... ---------- ४०
ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यग्लोकका प्रमाण-वर्णन ---------- ४१
सूक्ष्मपरिधि निकालनेका कारणसूत्र ---------- ४२
भरत, ऐरावत और विदेहसम्बन्धी... ---------- ४५
तैजससमुद्घात क्षेत्रका प्रमाम ---------- ४७
सयोगिकेवलीके क्षेत्रका निरूपण ---------- ४८
दंडसमुद्घातगत केवलीका क्षेत्र ---------- ४८
कपाटसमुद्घातगत केवलीका क्षेत्र ---------- ४९
प्रतरसमुद्घातगत केवलीका क्षेत्र ---------- ५०
लोकके चारों ओर स्थित तीनों वातवलयोंके क्षेत्रफलका निरूपण ---------- ५१-५५
लोकपूरणसमुद्घातगत केवलीका क्षेत्र ---------- ५६
आदेशसे क्षेत्रप्रमाणनिर्देश ---------- ५६-१३८
गतिमार्गणा ---------- ५६-८१
नरकगति ---------- ५६-६६
सामान्य नारकियोंका क्षेत्र ---------- ५६
नारककियोंकी अवगाहना ---------- ५७
प्रथम पृथिवीके तेरहों पटलोंके नारकोंकी ऊंचाई ---------- ५८
दवितीय पृथिवीके ग्यारहों पटलोंके नारकोंकी ऊंचाई ---------- ५९
तृतीय पृथिवीके नौ पटलोंके नारकोंकी ऊंचाई ---------- ६०
चतर्थ पृथिवीके सातों पटलोंके नारकोंकी ऊंचाई ---------- ६१
पंचम पृथिवीके पांचों पटलोंके नारकोंकी ऊंचाई ---------- ६१
छठी पृथिवीके तीनों पटलोंके नारकोंकी ऊंचाई ---------- ६२
सातवीं पृथिवीके नारकोंकी ऊंचाई ---------- ६२
नारकियोंके क्षेत्रको निकालनेके लिए अर्थपदका निरूपण ---------- ६३
सातो पृथिवियोंके नारकियोंका क्षेत्रवर्णन ---------- ६५
तिर्यंचगति ---------- ६६-७३
तिर्यंच मित्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र ---------- ६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासादनगुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक.. ---------- ६७
पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंचपर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच...---------- ६९
लब्ध्यपर्याप्तपंचेन्द्रियतिर्यंचोंका क्षेत्र ---------- ७३
मनुष्यगति----------७३-७७
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर...---------- ७३
सयोगिकेवलीका क्षेत्र ---------- ७५
लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंका क्षेत्र---------- ७६
देवगति ---------- ७७-८१
मिथ्यादृष्टि आदि चारों गुणस्थानवर्ती सामान्यदेवोंका क्षेत्र ---------- ७७
भवनवासी देवोंसे लेकर नव ग्रैवेयक तक...---------- ७७
भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके शरीर ऊंचाईका वर्णन ---------- ७९
नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंका क्षेत्र ---------- ८१
इन्द्रियमार्गणा---------- ८१-८७
सामान्य एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय...---------- ८१
वैक्रियिकसमुद्घातगत एकेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण... ---------- ८२
स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात और ... ---------- ८३
सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त विकलत्रय जीवोंके... ---------- ८५
पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्तकोंके ...---------- ८६
लब्धपर्याप्तक पंचेन्द्रिय जीवोंके क्षेत्रका वर्णन---------- ८७
कायमार्गणा ----------८७-१०२
पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक... ---------- ८७
रत्नप्रभादि सातों अधस्तन तथा उपरितन....---------- ८८-९१
पृथिवियोंमें सर्वत्र जल नहीं पाया जाता है... ---------- ९२
बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक,....---------- ९३
वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्तकी जघन्य अवगाहनासे....---------- ९४-९८
बादरनिगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंके सूत्रमें...---------- ९९
बादरवायुकायिक पर्याप्त जीवोंके क्षेत्रका निर्णय ---------- ९९
बादर, सूक्ष्म तथा पर्याप्तक और अपर्याप्तक वनस्पतिकायिक...----------१००
मिथ्यादृष्ट्यादि अयोगिकेवल्यन्त... ----------१०१
लब्ध्यपर्याप्तक त्रसजीवोंका क्षेत्र-वर्णन----------१०१
योगमार्गणा---------- १०२-१११
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली...----------१०२
वैक्रियकसमुद्घातगत, मारणान्तिकसमुद्घातगत तथा....----------१०२
काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र----------१०३
सासादनगुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायगुणस्थान... ----------१०३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काययोगी सयोगिकेवलीका क्षेत्र---------------------------------------------------------१०४
औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र---------------------------------------------१०४
त्रसपर्याप्तराशिका कितना भाग संचार करता है,...--------------------------------------- १०४
सासादनगुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली तक...------------------------------------------१०५
औदारिकमिश्रकाकयोगी मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्र --------------------------------------------१०५
औदारिकमिश्रका वैक्रियिकसमुद्घात आदि पदोंके साथ... ---------------------------------१०६
औदारिक मिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि...-------------------------------------------१०६
औदारिकमिश्रगकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और... -------------------------------------१०७
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर...--------------------------------------------------------१०८
वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि... ----------------------------------------------------१०९
आहारककाययोगी और आहारक मिश्रकाययोगी प्रमत्त संयतोंका क्षेत्र------------------१०९
कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि... ------------------------------------------------------ ११०-१११
वेदमार्गणा ------------------------------------------------------------------------------ १११-११३
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर...--------------------------------------------------------१११
मिथ्यादृष्ट्यादि नौ गुणस्थानवर्ती... -------------------------------------------------------११२
अपगतवेदी जीवोंका क्षेत्र -----------------------------------------------------------------११३
कषायमार्गणा------------------------------------------------------------------------- ११३-११७
क्रोध, मान, माया और लोभकषायी...---------------------------------------------------११३
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर...---------------------------------------------------११४
सूत्रमें ओघपद क्यों नहीं कहा... -----------------------------------------------------------११४
लोकके असंख्यातवें भागमें इतना ही पद सूत्रमें... ---------------------------------------११५
लोभकषायी सूक्ष्मसाम्परायिक शुद्धिसंयतोंका क्षेत्र ----------------------------------------११६
अकषायी जीवोंका क्षेत्र ------------------------------------------------------------------११६
उपशान्तकषायी जीवको अकषाय कैसे कहा... -------------------------------------------११७
ज्ञानमार्गणा ----------------------------------------------------------------------------- ११७-१२१
मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र--------------------------------------११७
मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका क्षेत्र---------------------------------११८
अचेतन और क्षणक्षयी शब्दकी अविनष्टरूपसे अनुवृत्ति... ---------------------------------११८
विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र तथा...-----------------११८
असंयतसम्यग्दृष्टि गुमस्थानसे लेकर क्षीमकषायवीतराग...--------------------------------११९
प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीमकषायान्त... ------------------------------------------------------११९
पर्यायार्थिक और द्रव्यार्थिकनयी देशनाओंके कहनेका प्रयोजन --------------------------१२०
केवलज्ञानी सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिनोंका क्षेत्र------------------------------१२०
स्वस्थानस्वस्थान पदका स्वरूप.... ---------------------------------------------------------१२१
संयममार्गणा ---------------------------------------------------------------------------- १२१-१२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संयमी जीवोंमें प्रमत्तसंयत... ---------- १२१
द्रव्यार्थिक नयदेशनाका प्रयोजन ---------- १२२
सयोगिकेवलीका क्षेत्र और पृथक् सूत्र... ---------- १२२
सामायिक और छेदोपस्थापना संयतोंममें प्रमत्तसंयत... ---------- १२२-१२३
परिहारविशुद्धिसंयत... ---------- १२३
परिहारविशुद्धइसंयमी प्रमत्त और... ---------- १२३
सूक्ष्मसाम्पराय संयमवाले उपशामक और... ---------- १२३
यथासंख्यातसंयमी, संयमासंयमी और असंयमी... ---------- १२४
ओघप्ररूपणाके भेद-प्रबेद और प्रकृतमें... ---------- १२५
असंयमी सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- १२५
दर्शनमार्गणा ---------- १२६-१२८
चक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि... ---------- १२६
लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंमें चक्षुदर्शन पाया जाता है... ---------- १२६
अचक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि से लेकर... ---------- १२७
अवधिदर्शनी और केवलदर्शनी जीवोंका क्षेत्र ---------- १२७
लेश्यामार्गणा ---------- १२८-१३१
कृष्ण, नील, और कापोत लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि... ---------- १२८
तेज और पद्मलेश्यावालोमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर... ---------- १२९
मारणान्तिक समुद्घातगत तेजोलेश्यावाले... ---------- १२९
वैक्रियिक, मारणान्तिक और उपपादपदगत पद्मलेश्या... ---------- १३०
शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें मिथ्यात्व... ---------- १३०
शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें सयोगिकेवली.... ---------- १३१
भव्यमार्गणा ---------- १३१-१३३
भव्यसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि... ---------- १३१
अभव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र ---------- १३२
विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिकसमुद्घातगत... ---------- १३२
सादिबंध करनेवाले जीव... ---------- १३२-१३३
एकेन्द्रियोंमें संचित अनन्त सादिबंधकोंमेंसे... ---------- १३३
सम्यक्त्वमार्गणा ---------- १३३-१३६
सामान्य सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि... ---------- १३३
वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयत गुणस्थान... ---------- १३४
उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयतगुणस्थान... ---------- १३४
मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदगत असंयत... ---------- १३५
उपशम श्रेणीसे उतरकर मरनेवाले... ---------- १३५
सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- १३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संज्ञीमार्गणा ---------- १३६
संज्ञी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थान... ---------- १३६
असंज्ञी जीवोंका क्षेत्र---------- १३६
आहारमार्गणा---------- १३७-१३८
आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि...---------- १३७
अनाहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र---------- १३७
अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि...---------- १३८
अनाहारक सयोगिकेवलीका क्षेत्र---------- १३८
स्पर्शनानुगम---------- १३९-३०९
विषयकी उत्थनिका ---------- १४१-१४५
धवलाकारका मंगलचारण और प्रतिज्ञा---------- १४१
स्पर्शनानुगमकी अपेक्षा निर्देशभेद-कथन ---------- १४१
नामस्पर्शन, स्थापनास्पर्शन, द्रव्यस्पर्शन... ---------- १४१-१४४
स्पर्शनशब्दकी निरुक्ति...---------- १४४-१४५
ओघसे स्पर्शनानुगमनिर्देश---------- १४५-१७३
मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र निरूपण ---------- १४५
स्पर्शनानुयोगद्वारके अवतारकी आवश्यकता...---------- १४५-१४६
लोकका प्रमाण-निरूपण---------- १४६-१४७
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका वर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्र ---------- १४८
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र---------- १४९-१६५
सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोंका स्वस्थानस्वस्थानक्षेत्र ---------- १४९
सासादनसम्यग्दृष्टि ज्योतिष्क देवोंका स्वस्थानक्षेत्र ---------- १५०-१६०
एक चन्द्रके परिवारका प्रमाण---------- १५१-१५२
ज्योतिष्कदेवोंके सर्व विमानोंका प्रमाण---------- १५२
स्वयम्भूरमण समुद्रके परभागमें राजुके अर्धच्छेदोंके अस्तित्वकी सिद्धि---------- १५५-१५६
राजुके अर्धच्छेद सर्व द्वीपसागरोंके प्रमामसे... ---------- १५७-१५८
चन्द्रबिम्बशलाकाओंकी उत्पत्ति---------- १५९
ज्योतिषी देवोंके विमानोंका प्रमाण ---------- १६०
सासादनसम्यग्द,टि व्यन्तर देवोंका स्वस्थानक्षेत्र-निरूपण ---------- १६१
सासादनसम्यग्दृष्टि जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं... ---------- १६२-१६३
जब कि सासादनसम्यग्दृष्टि देव एकेन्द्रियोंमें...---------- १६४
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका बारह बटे चौदह भागप्रमाम...---------- १६४
उपपादगत सासादनसम्यग्दृष्टि...---------- १६५
जिन आचार्योंका यह अभिमत...---------- १६५
सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि...---------- १६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संयतासंयत जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र---------- १६७-१६८
स्वयम्भूरमणसमुद्र और स्वयम्प्रभपर्वतके ...---------- १६८-१६९
प्रमत्तसंयत गुमस्थानसे लेकर अयोगिकेवली... ---------- १७०-१७२
सयोगिकेवलीका स्पर्शनक्षेत्र---------- १७२
आदेशसे स्पर्शनक्षेत्र-निर्देश---------- १७३-३०९
गतिमार्गणा---------- १७३-२४०
नरकगति---------- १७३-१९२
नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंका वर्तमान...---------- १७३
अतीतकालकी अपेक्षा विहारवत्स्वस्थानादि पदगत...---------- १७४
विग्रहगतिमें जीवोंके विग्रह सहेतुक होते हैं...---------- १७५-१७६
सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंका वर्तमान...---------- १७७
नारकावासोंके आकारोंका, तथा... ---------- १७८
सम्यग्मिथयादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि... ---------- १७९-१८२
प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि आदि चारों....---------- १८२-१८७
द्वितीय पृथिवीसे लेकर छठी पृथिवी तक... ---------- १८८-१८९
उक्त पृथिवियोंके सम्यग्मिथ्यादृष्टि और... ---------- १८९-१९०
सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका वर्तमान... ---------- १९०-१९१
सातवीं पृथिवीके सासादन सम्यग्दृष्टि... ---------- १९१-१९२
तिर्यंचगति---------- १९२-२१६
तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र... ---------- १९२-१९३
सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोंका वर्तमान... ---------- १९३-२०६
जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल---------- १९४
लवणसमुद्रका क्षेत्रफल---------- १९५
धातकीखंड आदि द्वीपों और कालोदक आदि...---------- १९५-१९८
स्वयम्भूरमण समुद्रके क्षेत्रफल...---------- १९८
सर्व समुद्रोंके क्षेत्रफलका संकलन-निरूपण---------- १९९-२०१
स्वयम्भूरमण समुद्रके अतिरिक्त शेष सर्व...---------- २०२-२०३
सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंच मेरुमूलसे नीचे... ---------- २०४-२०६
सम्यग्मिथ्यादृष्टि तिर्यंचोंका स्पर्शनक्षेत्र---------- २०६
असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत... ---------- २०७-२११
नवग्रैवेयकोंमें यदि मिथ्यादृष्टि... ---------- २०८
उपपादपरिणत असंयतसम्यग्दृष्टि... ---------- २०९-२१०
विहारवत्स्वस्थानादि पदपरिणत... ---------- २१०-२११
मिथ्यादृष्टि पंचेन्द्रिय... ---------- २११-२१२
त्रसनालीके बाहिर त्रसकायिक जीवोंके अभाव...---------- २१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासादनगुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक... ----------२१३
पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यंचोंका वर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्र ----------२१३
पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यंचोंका अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र... ----------२१४
अंगुलके असंख्यातवें भागमात्र... ----------२१४
महामच्छकी अवगाहनामें एक बन्धनसे बद्ध... ----------२१५
मनुष्यगति ---------- २१६-२२४
मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनी... ---------- २१६-२१७
उक्त तीनों प्रकारके सासादन सम्यग्दृष्टि मनुष्योंका वर्तमान... ---------- २१७-२२०
मनुष्योंसे अगम्य प्रदेशवाले कुलाचल आदिके क्षेत्रकी... ----------२१८
मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले नारकी... ---------- २१८-२२०
सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थनसे लेकर...----------२२०-२२३
मारणान्तिक समुद्घातगत असंयतसम्यग्दृष्टि...----------२२१
बद्धायुष्क असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके.... ---------- २२१-२२२
सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म परिधिक्षेत्रके निकालनेका करणसूत्र ----------२२१
सयोगिकेवली जिनोकां स्पर्शनक्षेत्र----------२२३
लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंका वर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्र ----------२२३
लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंका अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र----------२२४
देवगति ---------- २२४-२४०
मिथ्यादृष्टि और सासादन...----------२२४
उक्त देवोंका अतीत और अनागतकालसम्बन्धी...----------२२५
दिशा और विदिशाका स्वरूप...----------२२६
भवनवासियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंचोंका उपपाद...---------- २२६-२२७
सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके वर्तमान... ----------२२७
मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंके वर्तमानकालिक... ------ २२८-२२९
उक्त देवोंके अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका....---------- २२९-२३२
उपपादपदगत मिथ्यादृष्टि भवनवासी देवोंके... ----------२३०
मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि व्यन्तरदेवोंके ...---------- २३०-२३१
उपपादकी अपेक्षा तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा क्षेत्र... ----------२३१
व्यन्तरोंके प्रसंगोपात्त आवासस्थानोंका निरूपण ----------२३२
उपपादगत ज्योतिष्क देवोंका स्पर्शनक्षेत्र---------- २३२-२३३
सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि... ---------- २३३-२३४
सौधर्म और ईशानकल्पवासी देवोंमें....---------- २३४-२३६
इन्द्रिक, श्रेणीबद्ध और प्रकीर्णक...----------२३४
सौधर्मादि सर्व कल्पोंके विमानोंकी संख्याका निरूपण ---------- २३५-२३६
सौधर्मकल्पवासी देवोंका स्पर्शनक्षेत्र... ----------२३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सनत्कुमारकल्पसे लेकर सहस्रारकल्प तक के... ---------- २३७-२३८
आनतकल्पसे लेकर अच्युतकल्प तक... ---------- २३८-२३९
नवग्रैवेयकोंके मिथ्यादृष्टि आदि चारों गुमस्थानवर्ती... ---------- २३९
नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी... ---------- २४०
इन्द्रियमार्गणा ---------- २४०-२४६
बादर, सूक्ष्म और पर्याप्त अपर्याप्त एकेन्द्रिय... ---------- २४०-२४२
बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका... ---------- २४१
सामान्य एवं पर्याप्त और अपर्याप्त... ---------- २४२
उक्त तीनों प्रकारके विकलत्रय जीवोंके... ---------- २४३
पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त मिथ्यादृष्टि... ---------- २४४
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- २४५
लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंका वर्तमान... ---------- २४६
कायमार्गणा ---------- २४७-२५५
सामान्य तथा बादर पृथिवीकायिक... ---------- २४७
उक्त जीवोंने तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा क्षेत्र... ---------- २४७-२४८
बादर तेजस्कायिक और वायुकायिक... ---------- २४९-२५०
बादर पृथिवीकायिक, जलकायिक... ---------- २५०-२५२
बादर वायुकायिकपर्याप्त जीवोंका वर्तमान... ---------- २५२-२५३
वनस्पतिकायिक, निगोद, तथा उनके बादर... ---------- २५३-२५४
त्रसकायिक और त्रसकायिक. पर्याप्त... ---------- २५४
त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ---------- २५४-२५५
योगमार्गणा ---------- २५५
पांचों मनोयोगी और पांचो वचनयोगी... ---------- २५५-२५६
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- २५६-२५७
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- २५८
काययोगी सयोगिकेवलीका स्पर्शनक्षेत्र... ---------- २५८-२५९
औदारिककायगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ---------- २५९-२६०
औदारिककायगी सासादन सम्यग्दृष्टि... ---------- २६०-२६१
औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- २६१-२६२
प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- २६२-२६३
औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि... ---------- २६३-२६४
औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि,... ---------- २६४-२६५
वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि... ---------- २६६
वैक्रियिककाययोगी सासादन सम्यग्दृष्टि... ---------- २६७-२६८
वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि... ---------- २६८-२६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी प्रमत्तसंयतोंका स्पर्शनक्षेत्र ---------- २६९
कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र---------- २६९-२७०
कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और... ---------- २७०-२७१
कार्मणकाययोगी सयोगिकेवलीका स्पर्शनक्षेत्र---------- २७१
वेदमार्गणा---------- २७१-२७९
स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि... ---------- २७१-२७२
स्त्री और पुरुषवेदी सासादन सम्यग्दृष्टि... ---------- २७२-२७४
स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि ---------- २७४
स्त्री और पुरुषवेदी संयतासंयतोंका वर्तमान... ---------- २७४-२७५
प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- २७५-२७६
नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके तदन्तर्गत... ---------- २७६
नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि...---------- २७६-२७७
सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- २७७-२७९
अपगतवेदी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र---------- २७९
कषायमार्गणा---------- २८०-२८१
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- २८०
लोभकषायवाले सूक्ष्मसाम्परायगुणस्थानवर्ती...---------- २८०
उपशान्तकषाय आदि अन्तिम चार गुणस्थानवाले... ---------- २८०-२८१
ज्ञानमार्गणा ---------- २८१-२८५
मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- २८१-२८२
विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादन... ---------- २८२-२८३
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- २८३-२८४
प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- २८४
केवलज्ञानी सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिनोंका स्पर्शनक्षेत्र ---------- २८४-२८५
संयममार्गणा ---------- २८५-२८८
प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- २८५-२८६
प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- २८६
प्रमत्त और अप्रमत्तसंयत... ---------- २८६
उपशामक और क्षपक सूक्ष्मसाम्परायसंयमी... ---------- २८७
अन्तिम चार गुमस्थानवर्ती... ---------- २८७
संयमासंयमवाले जीवोंका तदन्तर्गत शंका... ---------- २८७
मिथ्यादृष्टि आदि चार गुणस्थानवर्ती असंयत... ---------- २८८
दर्शनमार्गणा---------- २८८-२९०
चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवों का...---------- २८८
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान से लेकर... ---------- २८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- २८९
अवधिदर्शनी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ---------- २८९
केवलदर्शनी जीवोंका स्पर्शन क्षेत्र ---------- २९०
लेश्यामार्गणा ---------- २९०-३०१
कृष्ण, नील और कापोत... ---------- २९०
उक्त तीनों अशुभलेश्यावाले... ---------- २९१-२९३
देवोंसे एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिक... ---------- २९२
कृष्ण, नील और कापोत लेश्यावाले... ---------- २९२
तिर्यंचगतिमें उत्पन्न होनेवाले देवोंको.... ---------- २९२
उक्त तीनों अशुभलेश्यावाले... ---------- २९३-२९४
तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- २९४-२९५
तेजोलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और... ---------- २९५-२९६
,जोलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंका वर्तमान... ---------- २९६-२९७
तेजोलेश्यावाले प्रमत्त औऱ अप्रमत्त... ---------- २९७
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- २९७-२९८
पद्मलेश्यावाले संयतासयत... ---------- २९८
पद्मलेश्यावाले प्रमत्त और अप्रमत्त... ---------- २९९
मिथ्यादृष्टि गुणस्थान.... ---------- २९९-३००
शुक्ललेश्यावाले तिर्यंच, शुक्ललेश्यावाले... ---------- ३००
उपपादपदपरिणत शुक्ललेश्या... ---------- ३००
प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- ३००-३०१
भव्यमार्गणा ---------- ३०१
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- ३०१
अभव्य जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ---------- ३०१
सम्यक्त्वमार्गणा ---------- ३०२-३०६
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- ३०२
असंयतसम्यग्दृष्टि गुण्थानस वर्ती क्षायिकसम्यक्त्वी... ---------- ३०२
उपपादपदगत असंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि... ---------- ३०२-३०३
संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- ३०३-३०४
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- ३०४
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवर्ती औपशमिकसम्यक्त्वी... ---------- ३०४-३०५
संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- ३०५
सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- ३०६
संज्ञिमार्गणा ---------- ३०६-३०७
संज्ञी मिथ्यादृष्टि... ---------- ३०६-३०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर...----३०७
असंज्ञी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ----३०७
आहारमार्गणा---- ३०८-३०९
आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र----३०८
आहारमार्गणाकी अपेक्षा उपपादपदका राजुप्रमाण... ----३०८
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर...----३०८
अनाहारक जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र... ----३०९
कालानुगम---- ३११-४८८
विषयकी उत्थनिका ---- ३१३-३२३
धवलकाराका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा----३१३
कालानुगमकी अपेक्षा निर्देशभेद-निरूपण----३१३
नामकाल, स्थापनाकाल, द्रव्यकाल और भावकाल... ---- ३१३-३१४
तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकालका स्वरूप...---- ३१४-३१६
द्रव्यकालके अस्तित्वको समर्थन करते हुए...----३१६
प्रकृत जीवस्थान आदिमें द्रव्यकालके.... ----३१६
व्यवहारकालके अस्तित्वकी पृष्टिमें... ----३१७
प्रकृतमें नोआगमभावकालका प्रयोजन... ----३१७
कालशब्दकी निरुक्ति और उसके पर्यायवाची...---- ३१७-३१८
समय, आवली, उश्वासनिःश्वास स्तोक...----३१८
दिन और रात्रिसम्बन्धी तीस मुहूर्तकों नाम ---- ३१८-३१९
पक्षका प्रमाण और दिवसोंके नाम----३१९
मास, वर्ष औऱ युग आदिका स्वरूप ----३२०
निर्देश, स्वामित्व आदि प्रसिद्ध छह...---- ३२०-३२२
यदि काल एकमात्र मनुष्यक्षेत्रके सूर्यमंडलमें... ----३२०
देवलोकमें तो दिन-रात्रिरूप कालका अभाव है...----३२१
निर्देशके पर्यायवाची नाम बदला कर दोनों... ---- ३२२-३२३
ओघसे कालानुगमनिर्देश ---- ३२३-३५७
मिथ्यादृष्टि जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा कालनिरूपण----३२३
एक जीवकी अपेक्षा कालके तीन भेद... ----३२४
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवको भी मिथ्यात्व...----३२५
एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट सादि-सान्त ----३२५
अर्धपुद्गलपरिवर्तनका स्वरूप... ---- ३२५-३२६
यदि जीवने आज तक भी समस्त पुद्गल... ----३२६
प्रथम समयमें गृहीत पुद्गल...----३२७
पुद्गलपरिवर्तनकालके तीन प्रकारोंका स्वरूप----३२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुद्गलपरिवर्तनके स्वरूपका बोधक यंत्र ---------- ३३०
अगहीत, मिश्र और गृहीत संबंधी... ---------- ३३१
नोकर्मपुद्गलपरिवर्तनके समान ही कर्मपुद्गलपरिवर्तन... ---------- ३३२
क्षेत्र, काल, भव और भावपुद्गलपरिवर्तन... ---------- ३३३-३३४
एक जीवकी अपेक्षा पांचो परिवर्तनवारोंका अल्पबहुत्व ---------- ३३४
पांचों परिवर्तनोंका कालसंबंधी अल्पबहुत्व ---------- ३३४
सादि-सान्त मिथ्यात्वके कुछ कम... ---------- ३३५
सम्यक्त्वकी उत्पत्ति और मिथ्यात्वका विनाश... ---------- ३३५
मिथ्यात्व नाम पर्यायका है... ---------- ३३६-३३७
अनन्तका स्वरूप और उसके प्रमाणमें... ---------- ३३८
व्ययसहित अर्धपुद्गलपरिवर्तन... ---------- ३३८
अक्षय अनन्त राशिका विवेचन ---------- ३३९
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका नानाजीवोंकी अपेक्षा... ---------- ३३९
उक्त जीवोंके उत्कृष्ट कालका सयुक्तिक कालवर्णन ---------- ३४०
एक जीवकी अपेक्षा सासादन... ---------- ३४१
उपशमसम्यक्त्वकालके अधिक माननेमें क्या दोष है... ---------- ३४१
एकजीवकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टियोंके... ---------- ३४२
सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल ---------- ३४२-३४३
अप्रमत्तसंयत जीव सम्यग्मिथ्यात्व... ---------- ३४३
सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव अपना काल पूरा कर पीछे संयमको... ---------- ३४३
नाना जीवोंकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका उत्कृष्ट काल ---------- ३४४
एक जीवकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके जघन्य कालका... ---------- ३४४
एक जीवकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उत्कृष्ट कालका... ---------- ३४५
असंयतसम्यग्दृष्टियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा काल... ---------- ३४५-३४६
एक जीवकी अपेक्षा असंयत... ---------- ३४६-३४७
एक जीवकी अपेक्षा असंयतसम्यग्दृष्टियोंके जघन्य कालका... ---------- ३४७-३४८
संयतासंयत जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा काल ---------- ३४८
एक जीवकी अपेक्षा संयतासंयतोंका जगन्य काल ---------- ३४९
सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संयमासंयमको क्यों नहीं... ---------- ३४९
एक जीवकी अपेक्षा संयतासंयतोंका उत्कृष्ट काल ---------- ३५०
प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका नाना जीवोंकी... ---------- ३५०
एक जीवकी अपेक्षा प्रमत्त और अप्रमत्त... ---------- ३५०-३५१
एक जीवकी अपेक्षा प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका उत्कृष्ट काल ---------- ३५१
चारों उपशामकोंका नाना जीवोंकी जघन्य काल ---------- ३५२
अप्रमत्तसंयतको अपूर्वकरण... ---------- ३५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाना जीवोंकी अपेक्षा चारों उपशामकोंके उत्कृष्ट... ---------- ३५२-३५३
एक जीवकी अपेक्षा चारों उपशामकोंका जघन्य काल---------- ३५३-३५४
एक जीवकी अपेक्षा चारों उपशामकोंका उत्कृष्टकाल---------- ३५४
चारों क्षपक और अयोगिकेवलीका नाना जीवोंकी अपेक्षा...---------- ३५४-३५५
उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल ---------- ३५५
सयोगिकेवली जिनका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य...---------- ३५६-३५७
आदेशसे काल प्रमाण-निर्देश
गतिमार्गणा
नरकगति---------- ३५७-३६३
नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंका नानाजीवोंकी अपेक्षा काल निरूपण ---------- ३५७
एक जीवकी अपेक्षा नारकी मिथ्यादृष्टियोंका...---------- ३५७-३५८
सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- ३५८
असंयतसम्यग्दृष्टि नारकियोंका...---------- ३५८-३५९
सातों पृथिवियोंके नारकियोंका नाना और एक जीवकी...---------- ३६०-३६१
सातों पथिवियोंके सासादन-सम्यग्दृष्टि और...---------- ३६१
सातों पृथिवियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि...---------- ३६१-३६३
तिर्यंचगति---------- ३६३-३७२
तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा काल वर्णन---------- ३६३
एक जीवकी अपेक्षा तिर्यंच मिथ्यादृष्टि...---------- ३६३-३६४
असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन इस वचनसे अनन्तताकी... ---------- ३६४
सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- ३६४
असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोंका नाना और एक जीवकी...---------- ३६५-३६६
संयतासंयत तिर्यंचोका नाना औऱ एकजीवकी... ---------- ३६६
पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रियपर्याप्त औऱ योनिमती...---------- ३६७-३६९
पंचानवे पूर्वकोटियोंकी पूर्व कोटीपृथक्त्वसंज्ञा...---------- ३६८
लब्ध्यपर्याप्तकोंमें स्त्रीवेदकी संभवता... ---------- ३६९
उक्त तीनों प्रकारके सासादन....---------- ३६९
उक्त तीनों प्रकारके असंयतसम्यग्दृष्टि... ---------- ३६९-३७१
उक्त तीनों प्रकारके संयतासंयत तिर्यंचोंका काल---------- ३७१
पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक... ---------- ३७१-३७२
मनुष्यगति ---------- ३७२-३८०
मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनी... ---------- ३७२-३७३
उक्त तीनों प्रकारके सासादन...---------- ३७४-३७५
उक्त तीनों प्रकारके सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- ३७५-३७६
उक्त तीनों प्रकारके असंयत सम्यग्दृष्टि...---------- ३७६-३७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त तीनों प्रकारके मनुष्योंका संयतासंयत... ---------- ३७८
लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंका नाना और... ---------- ३७९-३८०
देवगति ---------- ३८०-३८७
मिथ्यादृष्टि देवोंका नाना और एक जीवकी... ---------- ३८०
सासादन और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका काल ---------- ३८१
असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका नाना और... ---------- ३८१
भवनवासियोंसे लगाकर शतार... ---------- ३८२-३८४
घातायुष्क सम्यग्दृ,टि और मिथ्यादृष्टि ---------- ३८३
उक्त देवोंकी स्थिति बतलाने वाले... ---------- ३८४
भवनवासियोंसे लेकर सहस्रारकल्प तक... ---------- ३८५
आनतकल्पसे लेकर नवग्रैवेयकों तक... ---------- ३८५-३८६
नौ अनुदिश और विजयादि चार अनुत्तर... ---------- ३८६-३८७
सर्वार्थसिद्धि विमानवासी... ---------- ३८७
इन्द्रियमार्गणा ---------- ३८८-४०१
एकेन्द्रिय जीवोंका नाना और एक जीवकी अपेक्षा... ---------- ३८८
बादर एकेन्द्रिय जीवोंका नाना... ---------- ३८८-३८९
कर्मस्थितिको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणा... ---------- ३९०
बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका... ---------- ३९०
क्षुद्रभवग्रहणका काल... ---------- ३९०-३९२
अन्तर्मुहूर्तभी संख्यात आवली प्रमाण होता है... ---------- ३९२
बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक... ---------- ३९२
यदि कोई जीव बादर एकेन्द्रियोंमें उत्कृष्ट संख्यात... ---------- ३९३
बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंका नाना... ---------- ३९३-३९४
सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंका नाना और एक... ---------- ३९४
सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका... ---------- ३९४-३९५
जब कि एक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके आयुकर्मकी... ---------- ३९५
सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक... ---------- ३९६-३९७
सामान्य विकलत्रय और पर्याप्तक... ---------- ३९७-३९८
लब्ध्यपर्याप्तक विकलत्र जीवोंका... ---------- ३९८-३९९
पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त... ---------- ३९९-४००
सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर... ---------- ४००
पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंका काल ---------- ४००-४०१
कायमार्गणा ---------- ४०१-४०९
पृथिवीकायिक, जलकायिक... ---------- ४०१-४०२
बादरपृथिवीकायिक, बादरजलकायिक... ---------- ४०२-४०३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्मस्थितिसे किस कर्मकी स्थितिका अभिप्राय है---------- ४०३
उक्त पांचों प्रकारके पर्याप्त...---------- ४०३-४०४
उक्त पांचों प्रकारके लब्ध्यपर्याप्त...---------- ४०५
सूक्ष्म तथा पर्याप्तक और अपर्याप्तक...---------- ४०५-४०६
वनस्पतिकायिक जीवोंका काल---------- ४०६
निगोदिया जीवोंका नाना और एक जीवकी अपेक्षा... ---------- ४०६-४०७
बादरनिगोद जीवोंका काल ---------- ४०७
त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त... ---------- ४०७-४०८
सासादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थान...---------- ४०८
त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंका काल---------- ४०८-४०९
योगमार्गणा---------- ४०९-४३७
पांचों मनोयोगी और पांचो वचनयोगी मिथ्यादृष्टि... ---------- ४०९
एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंके...---------- ४०९-४१२
उक्त जीवोंके उत्कृष्ट कालका वर्णन---------- ४१२
पांचो मनोयोगी और पांचो वचनयोगी ---------- ४१२-४१३
उक्त योगवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- ४१३-४१४
पांचों मनोयोगी और पांचो वचनयोगी...---------- ४१४-४१५
एक समय सम्बन्धी विकल्पोंका गाथासूत्रद्वारा निरूपण ---------- ४१५
काययोगी मिथ्यादृ,टि जीवोंका नाना और एकजीवकी...---------- ४१५-४१७
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान से लेकर... ---------- ४१७
औदारिककायगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका... ---------- ४१७-४१८
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान से लेकर---------- ४१८
औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि... ---------- ४१८-४१९
औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- ४२०-४२१
औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि... ---------- ४२१-४२३
औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके नाना... ---------- ४२३-४२४
वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि और...---------- ४२५-४२६
वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- ४२६
वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि... ---------- ४२६-४२९
वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- ४२९-४३०
आहारककाययोगी प्रमत्तसंयतोंका नाना...---------- ४३१-४३२
आहारकमिश्रकाययोगी प्रमत्त.... ---------- ४३२-४३३
कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका... ---------- ४३३-४३५
तीन विग्रहवाली गति... ---------- ४३४-४३५
कार्मणकाययोगी सासादन... ---------- ४३५-४३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली.... ---------- ४३६-४३७
वेदमार्गणा ---------- ४३७-४४४
स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका... ---------- ४३७
स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- ४३८
स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि.... ---------- ४३८-४३९
संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- ४३९-४४०
पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका... ---------- ४४०-४४१
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- ४४१
नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि... ---------- ४४१-४४२
नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- ४४२
नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि... ---------- ४४२-४४३
संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- ४४३
अपगतवेदी जीवोंका काल ---------- ४४४
कषायमार्गणा ---------- ४४४-४४८
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- ४४४-४४५
किस कषायसे मरा हुआ जीव... ---------- ४४५
क्रोध, मान और माया... ---------- ४४६-४४७
उक्त कषाय तथा उक्त गुणस्थानवाले... ---------- ४४७-४४८
क,यरहित जीवोंका काल निरूपण ---------- ४४८
ज्ञानमार्गणा ---------- ४४८-४५१
मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी... ---------- ४४८-४४९
विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि... ---------- ४४९-४५०
विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका काल ---------- ४५०
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे... ---------- ४५०-४५१
अवधिज्ञानी संयतासंयतोंके... ---------- ४५१
प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- ४५१
केवलज्ञानियोंका काल निरूपण ---------- ४५१
संयममार्गणा ---------- ४५१-४५३
प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर... ---------- ४५१-४५२
प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे... ---------- ४५२
परिहारविशुद्धिसंयमी... ---------- ४५२
सूक्ष्मसाम्परायिक शुद्धिसंयतोंका काल ---------- ४५२
अन्तिम चार गुणस्थानवर्ती... ---------- ४५३
संयतासंयत जीवोंका काल ---------- ४५३
असंयत जीवोंका काल ---------- ४५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दर्शनमार्गणा---------- ४५३-४५५
चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका... ---------- ४५३-४५४
निर्वृत्यपर्याप्तकोंके समान... ---------- ४५४
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान... ---------- ४५४
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- ४५५
अवधिदर्शनी जीवोंका काल---------- ४५५
केवलदर्शनी जीवोंका काल ---------- ४५५
लेश्यामार्गणा ---------- ४५५-४७६
कृष्ण, नील और कापोतलेश्या... ---------- ४५५-४५८
तीनों अशुभ लेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- ४५८
तीनों अशुभ लेश्यावाले... ---------- ४५९
तीनों अशुभ लेश्यावाले... ---------- ४५९-४६२
तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावाले... ---------- ४६२-४६५
मिथ्यादृष्टि जीवके तेजोलेश्याकी... ---------- ४६३-४६५
तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावाले... ---------- ४६५
उक्त दोनों लेश्यावाले... ---------- ४६५-४६६
उक्त दोनों लेश्यावाले.... ---------- ४६६
उक्त जीवोंके एक जीवकी अपेक्षा लेश्यापरिवर्तन... ---------- ४६६-४७१
मिथ्यादृष्टि और असंयत... ---------- ४६७
तेज और पद्मलेश्याके समान कापोत और नील... ---------- ४६८
तेज या पद्मलेश्याके कालमें एक समय.... ---------- ४७०
पद्मलेश्याके कालमें विद्यमान... ---------- ४६९-४७०
उक्त प्रकारका जीव... ---------- ४७०
तेज और पद्मलेश्यावाले... ---------- ४७१
शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके... ---------- ४७१-४७२
शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- ४७२-४७३
शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत... ---------- ४७३-४७५
तेज, प्दम और शुक्ललेश्यासम्बन्धी.... ---------- ४७५
शुक्ल लेश्यावाले चारों उपशामक... ---------- ४७६
भव्यमार्गणा ---------- ४७६-४८०
भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि... ---------- ४७६-४८०
मिथ्यात्वके अनादि और अकृत्रिम... ---------- ४७६-४८०
मोक्षको जानेके कारण निरन्तर... ---------- ४७८
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- ४८०
अभव्य जीवोंका नाना और.... ---------- ४८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्वमार्गणा---------- ४८१-४८५
सामान्य सम्यग्दृष्टि... ----------४८१
असंयतसम्यग्दृष्टि....----------४८१
असंयत और संयतासंयत गुणस्थानवर्ती... ----------४८२
उक्त सम्यग्दृष्टि जीवोंका एक ... ----------४८३
प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर...---------- ४८३-४८४
सासादनसम्यग्दृष्टि.... ---------- ४८४-४८५
संज्ञिमार्गणा ---------- ४८५-४८६
संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंका...----------४८५
सासादनगुणस्थानसे लेकर...----------४८५
असंज्ञी जीवोंका नाना...----------४८६
आहारमार्गणा
आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका नाना और एक जीवकी अपेक्षा.... ---------- ४८६-४८७
सासादन गुणस्थानसे लेकर... ----------४८७
अनाहारक मिथ्यादृष्टि.... ---------- ४८७-४८८
अनाहारक अयोगिकेवलीका काल----------४८८
परिशिष्ट---------- १-४२
क्षेत्रप्ररूपणा सूत्रपाठ, ---------- १
स्पर्शनप्ररूपणा सूत्रपाठ,---------- ५
कालप्ररूपणा सूत्रपाठ---------- १३
अवतरण-गाथासूची---------- २६
न्यायोक्तियां---------- २७
ग्रंथोल्लेख---------- २८
पारिभाषिक शब्दसूची---------- ३०-४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org